बहुत छोटे आकार के समाज कठिनता से ही ऐतिहासिक प्रसिद्धि प्राप्त कर पाते हैं जबकि जनसंख्या में वृद्धि होने पर न केवल उसका अपने समीपवर्ती समाजों पर प्रभाव हो जाता है बल्कि इतिहास में भी प्रसिद्धि पाने का अवसर मिलता है।

किसी देश की बढ़ती हुई जनसंख्या राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। इस प्रकार इनमें होने वाली कमी उत्पादन और उपभोग में असन्तुलन उत्पन्न कर देती है। जनसंख्या की वृद्धि अनेक बुराइयों का कारण बनी है। इस प्रकार जनसंख्या के आकार ने समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

आयु समूह, जनसंख्या का शारीरिक वितरण, प्रजातीय मिश्रण, नगर और ग्रामों में जनसंख्या का अनुपात तथा विभिन्न व्यवसायों में जनसंख्या का वितरण समाज की संस्थाओं के रूप को प्रभावित करता है। इनमें कोई भी परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न कर देती है।

Scanned by CamScanner

यदि किसी देश में जन्म दर बढ़ गयी है और मृत्यु दर घट रही है तो उस देश में जनसंख्या बढ़ेगी और एक समय अति जनसंख्या की स्थिति उत्पन्न होगी।

जनसंख्या के घनत्व के बढ़ने से भी सामाजिक परिवर्तन होते हैं जैसे खान-पान की चीजों की वृद्धि हेतु गहन कृषि तथा नयी भूमि पर कृषि आरम्भ हो जाएगी कृषि के तरीकों में विकास किया जाएगा।

(ii) यदि जीवन पर जनसंख्या का दबाव बना रहा तो बहुत से लोग गाँव छोड़कर बाहर में जाकर बसने लगेंगे जिससे शहरों का विकास होगा। इस प्रक्रिया को नगरीकरण कहते हैं जो आधुनिकीकरण की प्रक्रिया होती है

3. प्राणीशास्त्रीय कारक (Biological factors) — इन दशाओं में जन्म और मृत्यु दर में होने वाले परिवर्तन समाज की आवश्यकताओं में परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न करता है।

स्त्री पुरुष का अनुपात भी सामाजिक जीवन को

अनेक स्त्रियों से आश्रित करता है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की जनसंख्या अधिक होने से बहुपत्नी विवाह का प्रचलन बढ़ेगा जिससे नए सामाजिक मूल्यों की आवश्यकता महसूस की जाने लगेगी। इसी तरह पुरुषों की संख्या बढ़ने से बहुपति विवाह का आरम्भ होगा।

1. आर्थिक कारक (Economic Factors) –

शिकारी, सामान्य एवं कृषि करने वाले समाजों में विभिन्न प्रकार दृष्टिगोचर होते हैं। शिकारी अवस्था से कृषि अवस्था में आने पर उस समाज के व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जाते हैं। इसी तरह जब कृषि स्तर से कोई सामाजिक औद्योगिक स्तर पर आता है तो उस समाज की सामाजिक संस्थाओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों और जनरीतियों आदि में व्यापक परिवर्तन हो जाते हैं।

5. सांस्कृतिक कारक (Cultural Factors)
संस्कृति जिसमें हम, धर्म, विचार, नैतिकता, परम्परा, लोकाचार, विश्वास, प्रथा तथा लोकरीति संस्थाओं को सम्मिलित करते हैं, सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख कारण है समाज की नयी पीढ़ियां अपनी प्रथाओं और परम्पराओं को वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपर्याप्त समझती है।
सम्बन्ध आर्थिक परिवर्तन संस्थाओं के परिवर्तन से होता है क्योंकि संस्थाएं भी सामाजिक जीवन को नियंत्रित करती है तथा व्यक्ति के कार्यों के लिए उत्तरदायी होती है।

Sunita Kumari
21/5/20.